07/ 01 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विश्व-कल्याणकारी स्थिति का अनुभव

➢➢ आवाज़ से परे अपने शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित रहने का अनुभव

➳ _ ➳ शांति के सागर अपने शिव पिता की याद में मैं आत्मा अशरीरी होकर बैठ जाती हूँ

→ मैं आत्मा इस भृकुटी के बीच में चमकती हुई सितारा हूँ

→ मैं अपनी स्वधर्म में स्थित रही हूँ

→ मेरा स्वधर्म है शान्ति

→ मैं आत्मा शान्ती का सागर परमपिता परमात्मा शिवभगवान की सन्तान मास्टर शान्तिसागर हूँ

■ मैं आत्मा अपने मन में उठने वाले व्यर्थ विचारों के तरंगो को शांत करती हूँ

■ मन-बुद्धि को भृकुटि के मध्य एकाग्र करती हूँ

➳ _ ➳ आवाज़ से परे रहने का अनुभव

→ मुझ आत्मा का निज धाम चांद सितारों से भी पार

→ आवाज़ से परे शान्ति का धाम है

→ मैं आत्मा इस शरीर से निकालकर अब मेरे धाम में चल रही हूँ

→ यहाँ मेरे धाम में परम शान्ति है

→ मैं शान्ति दूत हूँ

→ शान्ती का अवतार हूँ

■ मैं आत्मा बीजरूप अवस्था धारण करती हूँ

■ बीजरूप बाबा के समीप बैठ जाती हूँ

■ बीजरूप बाबा से एक हो जाती हूँ

■ बीजरूप बाबा से निकलती अनेक किरणों से मैं आत्मा अब मास्टरशान्तिसागर बन रही हूँ

■ मुझे सारे संसार को शान्ती का सहयोग देना हैं। दुःखी आत्माओं को सुख देना हैं।

➳ _ ➳ विश्वकल्याणकारी स्थिति

→ मैं आत्मा सर्व को आत्मा भाई-भाई की दृष्टी से देखती हूँ

→ परमात्मा की शक्तियाँ स्वयं में भरकर

→ सर्व आत्माओं को विकारों के बन्धन से मुक्त कर

→ मैं आत्मा सर्व पर निरन्तर सुख शांति की वर्षा करती हूँ

■ मेरी शुभ भावना और शुभ कामनाओं द्वारा सर्व आत्मायें दुःखो से मुक्त हो रही हैं

■ मेरे मीठे प्यारे शिवबाबा मेरे द्वारा विश्व कल्याण का महान कार्य करवा रहे हैं

→ मैं सर्व गुणों और शक्तियों से भरपूर आत्मा

→ जिसको जो भी गुण और शक्ति चाहिए, वो देती रहती हूँ

→ मन में बस सर्व का कल्याण करना

→ जो भी सामने आये उसे नजर से निहाल करना

→ उसको परमपिता से मिलाना

→ बस यही फुरना दिन-रात रहता हैं

■ मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा बाबा की राइट हैंड हूँ बाबा की सहयोगी हूँ